Toppersnotes®
Unleash the topper in you

मध्य प्रदेश

छात्रावास अधीक्षक

मध्य प्रदेश कर्मचारी चयन मंडल (MPESB)

भाग - 5

बाल विकास, प्रबंधन और पोक्सो एक्ट

SIERRA
INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	विकास की अवधारणा एवं अधिगम के साथ इसका संबंध	1
2	बाल विकास के आयाम	11
3	बाल विकास के सिद्धांत	25
4	पियाजे, पावलव, कोहलर और थार्नडाइक : रचना एवं आलोचनात्मक स्वरूप	27
5	बालक का मानसिक स्वास्थ्य एवं व्यवहार संबंधी समस्याए	42
6	बालकेंद्रित एवं प्रगतिशील शिक्षण की अवधारणा	49
7	विकास को प्रभावित करने वाले कारक	53
8	व्यक्तित्व	56
9	अधिगम कठिनाइयों, क्षति आदि से ग्रस्त बच्चों की आवश्यकताओं की पहचान	70
10	प्रतिभावान, सृजनात्मक, विशेष क्षमता वाले अधिगमकर्ताओं की पहचान	81
11	समस्याग्रत बालक : पहचान एवं निदानात्मक पक्ष	88
12	बुद्धि (Intelligence)	94
13	व्यक्तिगत विभिन्नताएँ	104
14	प्रबंधन सामान्य परिचय	111
15	प्रबंध के सिद्धांत	117
16	नियोजन (Planning)	124
17	संगठन (Organization)	130
18	नियुक्तिकरण (Staffing)	140
19	निर्देशन (Directing)	148
20	नियंत्रण (Controlling)	166
21	जीवन कौशल	171
22	व्यवसायिक पर्यावरण	186
23	मानव संसाधन प्रबंधन	194

1
CHAPTER

विकास की अवधारणा एवं अधिगम के साथ इसका संबंध

अभिवृद्धि की अवधारणा एवं अर्थ

अभिवृद्धि शब्द अभि + वृद्धि से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है – "चारों ओर फैल जाना।"

अभिवृद्धि का सामान्य अर्थ होता है आगे बढ़ना।

बालक की अभिवृद्धि के सन्दर्भ में इसे उसके शरीर के आन्तरिक एवं बाह्य अंगों के आकार, भार और इनकी कार्यक्षमता में होने वाली वृद्धि के रूप में देखा जाता है। मानव शरीर में यह वृद्धि एक आयु तक (18-20 वर्ष) ही होती है, उसके बाद इन अंगों में वृद्धि नहीं होती है अर्थात् इस आयु तक व्यक्ति पूर्ण वयस्क हो जाता है। इस वृद्धि को देखा-परखा जा सकता है और इसका मापन भी किया जा सकता है।

- यह एक **क्रमिक प्रक्रिया** है जो गर्भावस्था से लेकर परिपक्वता प्राप्त करने तक चलती है।
- **अभिवृद्धि** में शरीर एवं कोशिकाओं की **लम्बाई, भार तथा आकार** में वृद्धि होती है।
- यह प्रक्रिया **दृश्य और मापन योग्य** होती है। इसे देखा, तौला और मापा जा सकता है।
- **अभिवृद्धि एक निश्चित काल तक** ही होती है – सामान्यतः 18-20 वर्ष की आयु तक।
- **मानव शरीर की कार्यक्षमता और अभिवृद्धि की सीमा** इसकी दो विशेषताएँ हैं।
- **प्रत्येक अवस्था** की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ होती हैं, जैसे – शिशु अवस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था आदि।
- **अभिवृद्धि के साथ विकास (Development)** की प्रक्रिया भी निरंतर चलती रहती है।

फ्रैंक के अनुसार, "अभिवृद्धि से तात्पर्य कोशिकाओं में होने वाली वृद्धि से होता है, जैसे– लम्बाई और भार में वृद्धि।"

लाल एवं जोशी के अनुसार, "मानव अभिवृद्धि से तात्पर्य उसके शरीर के बाह्य एवं आंतरिक अंगों के आकार, भार एवं कार्यक्षमता में होने वाली उस वृद्धि से है, जो गर्भकाल से परिपक्वता तक चलती है।"

विकास

विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जो **सतत्** चलती है तथा जिसमें **गुणात्मक परिवर्तन** एवं **परिमाणात्मक (मात्रात्मक)** परिवर्तन दोनों सम्मिलित होते हैं।

- **गुणात्मक परिवर्तन :** कार्यशैली, कार्यक्षमता
- **परिमाणात्मक परिवर्तन** : लंबाई, वजन एवं आकार
- **सतत् :** सतत् का अर्थ है लगातार चलना अर्थात् पीछे की अवस्था पर पुनः ध्यान नहीं देना।

वृद्धि (Growth) < विकास (Development)

वृद्धि (Growth) → परिपक्वता (Maturity) के बाद रुक जाती है।

विकास (Development) → गर्भ से कब्र तक होता है। Womb to tomb

मुख्य बिंदु:

- **विकास** की प्रक्रिया में होने वाले सभी परिवर्तन एक जैसे नहीं होते –
  - ✓ प्रारंभिक अवस्था में रचनात्मक परिवर्तन होते हैं जो परिपक्वता लाते हैं।
  - ✓ उत्तरार्द्ध में विनाशात्मक परिवर्तन होते हैं जो व्यक्ति को वृद्धावस्था की ओर ले जाते हैं।
- **विकास एक क्रमिक परिवर्तन की श्रृंखला** है, जिससे व्यक्ति में नई विशेषताएँ उत्पन्न होती हैं और पुरानी समाप्त हो जाती हैं।

- **प्रौढ़ावस्था** में मनुष्य जिन गुणों से सम्पन्न होता है, वे विकास की दीर्घकालिक प्रक्रिया के परिणाम होते हैं।

हरलॉक के अनुसार- विकास केवल अभिवृद्धि तक ही सीमित नहीं है वरन् वह व्यवस्थित तथा समानुगत परिवर्तन है जिसमें कि प्रौढावस्था के लक्ष्य की ओर परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निहित रहता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति में नवीन विशेषताएँ एवं योग्यताएँ प्रकट होती हैं।

मुनरों के अनुसार- विकास परिवर्तन श्रृंखला की वह अवस्था है जिसमें बच्चा भ्रूणावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक गुजरता है, विकास कहलाता है।

जेम्स ड्रेवर के अनुसार - विकास वह दशा है जो प्रगतिशील परिवर्तन के रूप में सतत् रूप से व्यक्त होती है। यह प्रगतिशील परिवर्तन किसी भी प्राणी में भ्रूणावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक होता है। यह विकास तन्त्र को सामान्य रूप में नियन्त्रित करता है। यह प्रगति का मानदण्ड है और इसका आरम्भ शून्य से होता है।

विकास की विशेषताएँ:

- विकास एक **गुणात्मक परिवर्तन** है, जिसमें अभिवृद्धि भी शामिल होती है।
- विकास **जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया** है।
- मनोविज्ञान में विकास को **क्रमिक परिवर्तनों की प्रक्रिया** माना गया है।
- विकास को **मापा नहीं**, बल्कि **अनुभव** किया जा सकता है।
- इसमें **शारीरिक के साथ-साथ मानसिक परिवर्तन** भी होते हैं।
- विकास की **गति भिन्न-भिन्न होती है**, और यह विभिन्न अवस्थाओं में अलग-अलग दर से होती है।
- इसके कारण व्यक्ति में **नवीन विशेषताएँ एवं योग्यताएँ प्रकट** होती हैं।
- यह एक **व्यापक प्रक्रिया** है, जो जीवन काल में होने वाले सभी परिवर्तनों को सम्मिलित करती है।
- विकास **वातावरण एवं वंशक्रम** दोनों से प्रभावित होता है।
- विकास की दिशा **सामान्य से विशिष्ट** की ओर होती है।
- विकास में **मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रक्रियाएँ** शामिल होती हैं।

अभिवृद्धि एवं विकास मे अंतर

क्र.सं.	अभिवृद्धि	विकास
1.	अभिवृद्धि से तात्पर्य मनुष्य के आकार, बनावट एवं भार में होने वाली वृद्धि से है।	विकास से तात्पर्य मानसिक, शारीरिक, सामाजिक एवं चारित्रिक आदि व्यक्तित्वगत परिवर्तनों से होता है।
2.	अभिवृद्धि सीमित होती है तथा परिपक्वता के स्तर तक होती है।	विकास की कोई सीमा नहीं होती है। यह जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है।
3.	अभिवृद्धि केवल मात्रात्मक होती है।	विकास मात्रात्मक एवं गुणात्मक दोनों प्रकार का है।
4.	अभिवृद्धि क्रमानुसार एवं मापन योग्य रूप से होती है।	विकास का कोई क्रम निश्चित नहीं होता।
5.	अभिवृद्धि प्रायः शारीरिक रूप में दृष्टिगोचर होती है।	विकास दृष्ट एवं अदृश्य दोनों रूपों में होता है।
6.	अभिवृद्धि विकास को प्रभावित करती है।	विकास अभिवृद्धि से बहुत कम ही प्रभावित होता है।
7.	अभिवृद्धि केवल धनात्मक होती है।	विकास धनात्मक एवं ऋणात्मक दोनों होता है।
8.	अभिवृद्धि केवल आनुवंशिक प्रभाव के कारण होती है।	विकास पर आनुवंशिकता के साथ ही वातावरण का भी प्रभाव पड़ता है।

नोट : सामान्यत: वृद्धि एवं विकास एक दूसरे के पूरक होते हैं ।

विकास के सिद्धान्त

- **निरन्तरता का सिद्धान्त**
  - ✓ बालक का विकास गर्भावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।
  - ✓ बालक के प्रथम तीन वर्षों में विकास तीव्र गति से होता है जबकि बाद की अवस्था में मंद हो जाता है।
- **समान प्रतिमान का सिद्धान्त**
  - ✓ इस सिद्धान्त का प्रतिपादन गैसेल व हरलॉक ने किया।
  - ✓ इस सिद्धान्त के अनुसार सभी प्राणियों का विकास अपनी जाति के अनुसार ही होता है।
- **व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धान्त**
  - ✓ इस सिद्धान्त के अनुसार बालकों का विकास एक क्रम में होता है लेकिन उनके विकास में व्यक्तिगत भिन्नता होती है।
- **विकास की विभिन्न गति का सिद्धान्त**
  - ✓ विभिन्न व्यक्तियों के विकास की गति में भिन्नता होती है जो सम्पूर्ण जीवन भर चलती है।
- **विकास क्रम का सिद्धान्त**
  - ✓ बालक का विकास एक निश्चित क्रम में होता है।
  - ✓ जैसे- शैशवावस्था → बाल्यावस्था → किशोरावस्था → युवावस्था → प्रौढ़ावस्था आदि
- **एकीकरण का सिद्धान्त**
  - ✓ बालकों का विकास पहले सम्पूर्ण अंगों का विकास होता है उसके बाद अंगों के भागों का विकास होता है। उसके बाद सभी अंगों का एकीकरण होता है।
- **सामान्य व विशिष्ट प्रतिक्रियाओं का सिद्धान्त**
  - ✓ इस सिद्धान्त के अनुसार बालक का विकास सामान्य प्रतिक्रियाओं से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं की ओर होता है।
- **वंशानुक्रम एवं वातावरण की अन्तः क्रिया का सिद्धान्त**
  - ✓ बालक का विकास वंशानुक्रम एवं वातावरण दोनों की अन्तः क्रिया का फल है।
- **परस्पर संबंध का सिद्धान्त**
  - ✓ बालक के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक आदि सभी भागों का विकास एक-दूसरे पर निर्भर करता है।
- **विकास की दिशा का सिद्धान्त**
  - ✓ बालक का विकास सिर से पैर की ओर होता है। इसके सीरोपुच्छीय सिद्धान्त भी कहते है।
- **केन्द्रोभिमुखी विकास**
  - ✓ बालक का विकास केन्द्र से बाहर की ओर होता है।
- **वर्तुलाकार विकास का सिद्धान्त**
  - ✓ बालक का विकास एक वर्त की तरह होता है। इसे चक्रीय विकास का सिद्धान्त भी कहते है।

बाल विकास

- बाल मनोविज्ञान में बालक का जन्म से लेकर किशोरावस्था तक अध्ययन किया जाता है।
- बाल विकास में बालक का गर्भावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक अध्ययन किया जाता है। इसी कारण बाल मनोविज्ञान को बाल विकास कहा जाने लगा।

बाल विकास का संक्षिप्त इतिहास

- बाल मनोविज्ञान को बाल विकास इसलिए कहा जाने लगा कि उसमें एक पक्ष के अध्ययन की बजाय सभी पक्षों का अध्ययन किया जाता है।
- सर्वप्रथम **1629 ई.** में **कॉमेनियस** ने **'School of Infancy'** की स्थापना कर **बाल विकास का अध्ययन** शुरू किया।

- **पेस्टोलॉजी** ने बाल मनोविज्ञान पर वैज्ञानिक अध्ययन किया तथा अपने साढ़े तीन वर्षीय बेटे पर प्रयोग किये तथा **Baby Biography** की रचना की।
- **प्रेयर** ने बालको पर **Mind of Child** नामक पुस्तक की रचना की।
- 19वीं शताब्दी में **स्टेनले हॉल** ने **Child Study Society** एवं **Child Welfare Organization** नामक संस्थाओं की स्थापना अमेरिका में की ।
- **स्टेनले हॉल** को **बाल मनोविज्ञान का जनक** माना जाता है।
- **टैने** ने **1869** ई. में **Infant Child Development** नामक पुस्तक की रचना की।
- भारत में **बाल विकास अध्ययन 1930 ई.** में **कलकत्ता विश्वविद्यालय** में **ताराबाई मोडेक** के प्रयासों से किया गया।

परिभाषाएँ :-

क्रो एंड क्रो, "बाल मनोविज्ञान एक वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमे बालक गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक अध्ययन किया जाता है।"

बर्क, "बाल विकास मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म पूर्व अवस्था से परिपक्व अवस्था तक होने वाले सभी परिवर्तनों को स्पष्ट किया जाता है।"

जेम्स ड्रेवर "जन्म से परिपक्वता तक विकसित हो रहे मानव का अध्ययन किया जाता है।"

आइनजेक "बाल मनोविज्ञान का संबंध बालक में मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के विकास से है इससे गर्भकालीन, जन्म, शैशावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और परिपक्वता तक बालक की विकास प्रतिक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।"

बाल विकास की आवश्यकताएँ

- **बालकों की मनोरचना की जानकारी प्राप्त करने हेतु :** बालकों की मानसिक स्थिति, रुचियाँ, क्षमताएँ एवं समस्याओं को समझने के लिए बाल विकास का अध्ययन आवश्यक है।
- **बाल विकास की प्रक्रिया को समझने के लिए :** जन्म से लेकर वयस्कता तक बालक के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक परिवर्तनों की समझ के लिए यह अनिवार्य है।
- **बाल निर्देशन व परामर्श मे सहायक :** सही दिशा-निर्देश एवं परामर्श देने के लिए बालक की अवस्था व विकास स्तर की जानकारी आवश्यक होती है।
- **बालकों के प्रति भविष्यवाणी करने मे सहायक :** बालक के वर्तमान व्यवहार और विकास के आधार पर उसके भविष्य के व्यवहार व व्यक्तित्व की संभावनाओं का आकलन किया जा सकता है।
- **बाल व्यवहार का मार्गान्तरिकरण व नियंत्रण मे सहायक :** बालक के व्यवहार को सकारात्मक दिशा में मोड़ने तथा अनुशासित करने के लिए उसके विकास का ज्ञान आवश्यक है।

बाल विकास के क्षेत्र

- **बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन :** शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था आदि प्रत्येक अवस्था के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व संवेगात्मक विकास का अध्ययन।
- **बाल विकास के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन :** शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक, संवेगात्मक तथा भाषायी विकास आदि सभी पहलुओं की समग्र समझ।
- **बालकों की विभिन्न असमान्यताओं का अध्ययन :** शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं व्यवहारिक विकृतियों या समस्याओं जैसे – मंद बुद्धिता, अंधापन, श्रवण बाधा, व्यवहार विकार आदि का विश्लेषण।

- **मानसिक स्वास्थ्य विज्ञान का अध्ययन :** मानसिक संतुलन, तनाव प्रबंधन, समायोजन क्षमता, तथा सकारात्मक सोच आदि का अध्ययन।
- **बालकों की विभिन्न मानसिक प्रक्रियाओं का अध्ययन :** अनुभूति, स्मृति, कल्पना, संवेग, अभिप्रेरणा, निर्णय, सोच आदि मानसिक क्रियाओं की प्रक्रिया का विश्लेषण।
- **बालकों की रुचियों का अध्ययन :** बालकों की व्यक्तिगत पसंद-नापसंद, झुकाव एवं अभिरुचियों का अध्ययन, जिससे उनकी क्षमताओं का विकास संभव हो।
- **बालकों की वैयक्तिक भिन्नताओं का अध्ययन :** बुद्धि, अभिरुचि, अभिक्षमता, स्वभाव, सीखने की गति आदि में पाई जाने वाली भिन्नताओं का मूल्यांकन।
- **बालकों के व्यक्तित्व का मूल्यांकन :** बालकों के व्यक्तित्व के विभिन्न आयामों जैसे – आत्मविश्वास, नेतृत्व, समायोजन, व्यवहार आदि का निरीक्षण एवं परीक्षण।

बाल विकास के अध्ययन का महत्व

- **विकासात्मक क्रियाओं का ज्ञान प्राप्त होना :** बाल विकास के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि बालकों में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, भाषायी और संवेगात्मक विकास कैसे क्रमिक रूप से होता है। इससे शिक्षकों, अभिभावकों और शिक्षाविदों को यह समझने में सहायता मिलती है कि किस अवस्था में बालक को किस प्रकार की सहायता और गतिविधियों की आवश्यकता है।
- **बाल पोषण विधियों का ज्ञान :** शारीरिक विकास के साथ-साथ संतुलित पोषण भी बालक की वृद्धि और स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। बाल विकास के अध्ययन से बालकों की आयु, विकास स्तर और आवश्यकताओं के अनुसार उचित पोषण पद्धतियों की जानकारी प्राप्त होती है, जिससे शारीरिक दुर्बलताओं और बीमारियों से बचाव संभव हो पाता है।
- **व्यक्तिगत भिन्नताओं की जानकारी प्राप्त होना :** हर बालक अलग होता है – उसकी रुचियाँ, क्षमताएँ, सीखने की गति और सोचने की शैली भिन्न होती है। बाल विकास का अध्ययन हमें इन वैयक्तिक भिन्नताओं को पहचानने और स्वीकार करने में सहायता करता है, जिससे हर बालक को उसकी आवश्यकतानुसार शिक्षा एवं मार्गदर्शन प्रदान किया जा सके।
- **विकास की अवस्थाओं का ज्ञान :** बाल विकास अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि बालकों का विकास विभिन्न अवस्थाओं में कैसे होता है – जैसे शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था आदि। प्रत्येक अवस्था के भिन्न-भिन्न लक्षणों और आवश्यकताओं को समझकर अभिभावक और शिक्षक बालकों की उचित देखभाल कर सकते हैं।
- **बालकों के प्रशिक्षण और शिक्षण मे उपयोगी :** बाल विकास का ज्ञान शिक्षक को यह निर्णय लेने में सहायक होता है कि किस उम्र में कौन-सी विषयवस्तु, शैक्षिक विधि और गतिविधियाँ उपयुक्त होंगी। यह शिक्षण को अधिक प्रभावशाली, वैज्ञानिक और बालक-केंद्रित बनाता है।
- **बालकों के व्यक्तित्व निर्माण मे सहायक :** एक संतुलित और सकारात्मक व्यक्तित्व का निर्माण बाल्यावस्था में ही प्रारम्भ होता है। बाल विकास के अध्ययन से यह समझने में मदद मिलती है कि कौन-से कारक व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं और किस प्रकार उचित वातावरण, प्रशिक्षण, अनुशासन और अभिप्रेरणा द्वारा बालक के व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास संभव है।

विकास की अवस्थाएँ

- शैशवावस्था - जन्म से 5 वर्ष
- बाल्यावस्था - 6 वर्ष से 12 वर्ष
- किशोरावस्था - 13 वर्ष से 18 वर्ष
- प्रौढ़ावस्था - 19 वर्ष के बाद

जेम्स ट्रैवर "जन्म से परिपक्वता तक विकसित हो रहे मानव का अध्ययन किया जाता है।'

कॉलसैनिक के अनुसार

- शैशव - जन्म से 3/4 सप्ताह
- उत्तर शैशव - 2 वर्ष तक
- पूर्व बाल्यावस्था - 2 से 6 वर्ष
- मध्य बाल्यावस्था - 6 से 9 वर्ष
- उत्तर बाल्यावस्था - 9 से 12 वर्ष
- किशोरावस्था - 12 से 21 वर्ष

हरलॉक के अनुसार विकास की अवस्थाएँ

- गर्भावस्था - गर्भधारण से जन्म तक
- शैश्वावस्था - जन्म से 14 दिन तक
- बचपनावस्था - 14 दिन से 2 वर्ष तक
- पूर्व बाल्यावस्था - 3 से 6 वर्ष तक
- उत्तर बाल्यावस्था - 7 वर्ष से 12 वर्ष तक
- वयः संधि - 12 से 14 वर्ष
- पूर्व किशोरावस्था - 13-14 वर्ष से 17 वर्ष तक
- उत्तर किशोरावस्था - 18 से 21 वर्ष
- प्रौढावस्था - 21 से 40 वर्ष
- मध्यावस्था - 41 से 60 वर्ष
- वृद्धावस्था - 60 के बाद

रोस के अनुसार

- शैशवावस्था - 1 से 3 वर्ष
- पूर्व बाल्यावस्था - 3 से 6 वर्ष
- उत्तर बाल्यावस्था - 6 से 12 वर्ष
- किशोरावस्था - 12 से 18 वर्ष तक

विभिन्न अवस्थाओं का सामान्य वर्णन

- **गर्भकालीन अवस्था :** यह गर्भधारण से जन्म तक की अवस्था हैं । इस अवस्था की विकास प्रक्रियाओं के अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से इस अवस्था की तीन उप अवस्थाएँ हैं -
  - ✓ **बीजावस्था :** यह गर्भधारण से दो सप्ताह की अवस्था हैं ।
  - ✓ **भ्रूणावस्था :** यह दो सप्ताह से 8 सप्ताह तक की प्रक्रिया हैं । इस अवस्था का जीव भ्रूण कहलाता हैं । इसमे जीव के मुख्य अंगों का निर्माण होता हैं ।
  - ✓ **गर्भावस्था शिशु की अवस्था :** यह आठ सप्ताह से जन्म से पूर्व तक की अवस्था हैं ।
- **शैशवावस्था :** यह जन्म से 14 दिनों की अवस्था हैं। इस अवस्था मे शिशु को नवजात शिशु की संज्ञा दी जाती हैं ।
- **बचपनावस्था** : यह अवस्था से 2 सप्ताह से 2 वर्ष तक की अवस्था हैं । इस अवस्था मे बालक पूर्णत: असहाय होता हैं और अपनी आवश्यकताओं के लिए दूसरों पर निर्भर होता हैं, इस अवस्था मे विकास की गति तीव्र होती हैं ।
- **बाल्यावस्था :** यह अवस्था तीन वर्ष के प्रारम्भ से तेरह - चौदह वर्ष तक की अवस्था हैं । इस अवस्था को अध्ययन की सुविधा हेतु दो भागों मे बांटा गया हैं -
  - ✓ पूर्व बाल्यावस्था :
  - ✓ उत्तर बाल्यावस्था
  - ✓ बालक मे नवीन प्रवृत्तियाँ, जिज्ञासा, सृजनशीलता, अनुकरण इत्यादि का उदय होने लगता हैं ।
  - ✓ बालक प्रथम बार अकेले सामाजिक वातावरण मे प्रवेश करता हैं और विद्यालय जाना प्रारंभ करता हैं।
- **वय संधि या पूर्व किशोरावस्था :** उत्तर बाल्यावस्था और किशोरावस्था के मध्य का भाग । जिसमे दोनों अवस्था के दो - दो वर्ष शामिल होते हैं । इस कारण से यह अवस्था को मिश्रित अवस्था कहा जाता हैं । इस अवस्था मे यौन अंगों का विकास होता हैं । शारीरिक एवं मानसिक विकास की गति इस अवस्था मे बाल्यावस्था से तीव्र होती हैं ।

- **किशोरावस्था :** बाल्य जीवन की यह अंतिम अवस्था हैं । यह अवस्था 14-15 वर्ष से 21 वर्ष तक की अवस्था है ।
  - ✓ **पूर्व किशोरावस्था -** 17 वर्ष तक की अवस्था
  - ✓ **उत्तर किशोरावस्था -** 17 वर्ष से 21 वर्ष तक की अवस्था
  - ✓ **नोट :** इस अवस्था को कुछ विद्वान स्वर्ण आयु भी कहते हैं । इस अवस्था मे विपरीत सेक्स के लोगों के प्रति आकर्षण बढ़ जाता हैं तथा सामाजिकता और कामुकता इस अवस्था की दो मुख्य विशेषताएँ हैं ।
- **प्रौढ़ावस्था :** यह 21 वर्ष से 40 वर्ष तक अवस्था हैं। इसमे कर्तव्यों और उत्तरदायित्वों का निर्वाह कर सकता हैं । जन जीवन की विभिन्न परिस्थितियों मे उसका स्वस्थ समायोजन हो और वह उपलब्धियों को प्राप्त कर सके ।
- **मध्यवस्था, उत्तर मध्यवस्था :** यह अवस्था 41 से 64 वर्ष तक की अवस्था हैं । इस अवस्था मे व्यक्ति के अंदर शारीरिक व मानसिक परिवर्तन होते हैं । इस समय व्यक्ति सुखमय और सम्मान जनक जीवन की कमाना करता हैं ।
- **वृद्धावस्था :** यह अवस्था 65 वर्ष के आगए की अवस्था कहलाती हैं । यह जीवन की अंतिम अवस्था के रूप मे जानी जाती हैं । इस अवस्था मे याददाश्त कमजोर और शारीरिक एवं मानसिक क्षमताओं मे कमी आने लगती हैं ।

शैशवावस्था

- 0 से 5 वर्ष/जन्म से 5 वर्ष

थार्नडाइक "3 से 6 वर्ष की आयु का बालक प्रायः अर्द्ध स्वप्न की अवस्था में रहते है।"

फ्रायड "व्यक्ति को जो कुछ भी बनना होता है वह चार-पाँच वर्षों में बन जाता है।"

स्ट्रेंग "जीवन के प्रथम दो वर्षों में बालक अपने भावी जीवन का शिलान्यास करता है।"

गुड एनफ "व्यक्ति का जितना विकास होता है। उसका आधा 3 वर्ष में हो जाता है।"

वेलेन्टाइन,"शैशवावस्था सीखने का आदर्शकाल है।"

गैसल, "प्रारम्भिक 6 वर्षों का विकास बाद के 12 वर्ष से भी दुगुना विकास होता है।"

ब्रिजेज, "दो वर्ष की उम्र तक बालक में सभी संवेगों का विकास हो जाता है।"

क्रो एंड क्रो "20 वी शताब्दी को बालक की शताब्दी कहा"।

रूसो,"बालक के हाथ पैर व आँख उसके प्राथमिक शिक्षक होते है।"

ड्राइडेन, "सर्वप्रथम हम हमारी आदतों का निर्माण करते बाद में आदतें हमारा निर्माण करती है।"

शैशवावस्था की विशेषताएँ

- शारीरिक विकास की तीव्रता
- मानसिक विकास की तीव्रता
- कल्पना की सजीवता
- आत्म प्रेम / स्वमोह की अवस्था
- नैतिक गुणों का विकास
- मूल प्रवृत्तियों पर आधारित व्यवहार
- अनुकरण द्वारा सीखने की प्रक्रिया
- जिज्ञासा प्रवृत्ति
- दोहराने की प्रवृत्ति
- अन्तर्मुखी व्यक्तित्व
- संवेगो का प्रदर्शन
- काम शक्ति का प्रदर्शन
- खिलौनों में सर्वाधिक रूचि
- प्रिय लगने वाली अवस्था
- प्रारम्भिक विद्यालय की पूर्व तैयारी की आयु
- भाषाई कौशलों का विकास

शैशवावस्था के उपनाम

- सीखने का आदर्श काल - वेलेन्टाइन
- जीवन का महत्वपूर्ण काल
- भावी जीवन की आधारशीला
- अनुकरण द्वारा सीखने की अवस्था
- खिलौनो की आयु
- पूर्व प्राथमिक विद्यालय की आयु
- पराधीनता की अवस्था
- अतार्किक चिन्तन की अवस्था
- खतरनाक काल
- बक्की अवस्था
- बादशाह की अवस्था
- सीखने का स्वर्ण काल अवस्था
- नामकरण विस्फोट की अवस्था
- कल्पना जगत में विचरण की अवस्था

नवजात शिशुओं में प्रमुख प्रतिवर्ती अवस्थाएँ

प्रतिवर्त	**विवरण**	**विकासात्मक क्रम**
रूटिंग अवस्था	गाल को छूने पर सिर को घुमाना एवं मुख खोलना।	3 से 6 माह में विलुप्त हो जाती है।
मोरों अवस्था	यदि तीव्र शोर होता है तो बच्चा अपनी कमर को झटका देता है, हाथ-पैर फैला लेता है और फिर सिकोड़कर अपनी छाती के पास लाता है जैसे वह कुछ पकड़ रहा हो।	3 से 7 माह में विलुप्त हो जाती है (यह स्थिति शोर के प्रति अनुक्रिया को दर्शाती है)।
पकड़ना	बच्चे की हथेली को स्पर्श करने अथवा कोई वस्तु रखने पर यदि वह वस्तु पकड़ लेता है तो उसकी उंगलियाँ अत्यंत दृढ़ता से लिपट जाती हैं।	3 से 4 माह में विलुप्त हो जाती है (इसके पश्चात यह स्वैच्छिक हो जाती है)।
बेबिन्सकी अवस्था	यदि बच्चे के पैर के तलवे को ठोका जाता है तो पैर की उंगलियाँ ऊपर की ओर जाती हैं और फिर आगे की ओर मुड़ जाती हैं।	8 से 12 माह में विलुप्त हो जाती है।

बाल्यावस्था-(6 से 12 वर्ष तक)

कोल एवं ब्रूस, "बाल्यावस्था जीवन का अनोखा काल है।"

रास, "बाल्यावस्था को मिथ्या या छद्म परिपक्वता का काल कहा है।"

स्ट्रेंग"ऐसा शायद ही कोई खेल हो जिसे बालक 10 वर्ष की उम्र मे ना खेला हो।"

किल पेट्रिक "बाल्यावस्था को प्रतिद्वन्दात्मक समाजीकरण का काल कहा है।"

बर्ट "बाल्यावस्था में भ्रमण व साहसिक कार्य की प्रवृति में वृद्धि होती है।"

ब्लेयर, जोन्स,"शैक्षिक दृष्टिकोण से बाल्यावस्था से अधिक जीवन में कोई महत्वपूर्ण अवस्था नहीं है।"

एटकिन्सन"बाल्यावस्था जीवन का सबसे आनन्ददायक काल है।"

बाल्यावस्था की विशेषताएँ

- शारीरिक विकास में स्थिरता
- मानसिक विकास में स्थिरता
- वास्तविक जगत से संबंधित
- समूह भावना का विकास
- नैतिक गुणो का विकास
- संग्रह करने की प्रवृति
- रूचियों में परिवर्तन
- बहिर्मुखी व्यक्तित्व
- वैचारिक क्रिया की अवस्था
- नये कौशलों एवं क्षमताओ के विकास की वृद्धि
- स्थूल संक्रियात्मक अवस्था
- अदला-बदली की भावना
- हीन भावना का शिकार
- पक्षपात की भावना
- परिश्रम हीनता
- चोरी करना, झूठ बोलना, झगड़ा करना आदि
- जिज्ञासा की प्रबलता
- निरूद्देश्य भ्रमण की प्रवृति
- काम प्रवृति की न्यूनता

बाल्यावस्था के उपनाम

- मूर्त चिंतन की अवस्था
- प्राथमिक विद्यालय की अवस्था
- शैक्षणिक दृष्टि से महत्वपूर्ण काल
- टोली / समूह की अवस्था
- वस्तु संग्रहण की अवस्था
- मिथ्या परिपक्वता का काल
- छद्म परिपक्वता का काल
- नेता बनने की इच्छा
- वैचारिक अवस्था का काल
- संग्रह करने की प्रवृत्ति
- गंदी आयु (Dirty Age)
- सारस अवस्था

किशोरावस्था - (12 से 18 वर्ष तक)

- किशोरावस्था अंग्रेजी के Adolescence शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। जिसका अर्थ "परिपक्वता" होता है। यह शब्द लैटिन भाषा का है।
- 1904 में स्टेनले हॉल ने "Adolescence" नामक पुस्तक लिखी। स्टेनले हॉल को किशोरावस्था का जनक माना जाता है।
  - ✓ **त्वरित/आकस्मिक विकास का सिद्धान्त (स्टेनले हॉल) :** इस सिद्धान्त के अनुसार बालक-बालिकाओं में जो भी परिवर्तन होते है वे सब आकस्मिक होते है।
  - ✓ **क्रमिक विकास का सिद्धान्त (थार्नडाइक) :** इस सिद्धान्त के अनुसार किशोरावस्था में जो भी परिवर्तन होते है वे अचानक न होकर एक क्रमिक रूप में होता है।

वेलेंटाइन, "किशोरावस्था अपराध प्रवृति के विकास का नाजुक समय है।"

रॉस/जॉस,

- "किशोरावस्था शैशवावस्था की पुनरावृति है।"
- "किशोर समाज सेवा के आदर्शों का निर्माण व पोषण करते है।"

किलपैट्रीक, "किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल है।"

स्टेनले हॉल, "किशोरावस्था संघर्ष, तनाव, तूफान की अवस्था है।"

स्किनर, "किशोर को निर्णय का कोई अनुभव नही है।"

क्रो एंड क्रो,"किशोर ही वर्तमान की शक्ति व भावी शक्ति की आशा को प्रदर्शित करता है।"

एरिक्शन,"किशोरावस्था में किशोर स्वयं के व्यक्तित्व का स्पष्टीकरण चाहते है।"

ToppersNotes Unleash the topper in you

किशोरावस्था की विशेषता

- दलभक्ति की अवस्था
- सामाजिक स्वीकृति की अवस्था
- सुनहरी अवस्था
- उथल-पुथल की अवस्था
- तार्किक चिंतन की अवस्था
- आत्म सम्मान एवं आत्म स्वीकृति की अवस्था
- व्यक्तिगत एवं घनिष्ठ मित्रता की अवस्था
- प्रबल दबाव, तनाव की अवस्था
- संवेगात्मक परिवर्तन की अवस्था
- द्रुत एवं तीव्र विकास की अवस्था
- शारीरिक व मानसिक विकास में तीव्रता (बिग एवं हंट)
- ईश्वर व धर्म में विश्वास
- समाजसेवा की भावना
- अपराधि प्रवृति का विकास
- स्थिरता एवं समायोजन का अभाव
- व्यवहार में भिन्नता
- चहुमुखी विकास
- वीर पूजा
- विषमलिंगी सद्भावना
- दिवास्वप्न की अधिकता
- प्रतियोगी भावना एवं नेतृत्व करना
- अनैतिक कार्य एवं आत्महत्या करना

किशोरावस्था के उपनाम

- जीवन की बसन्त ऋतु
- जीवन का स्वर्ण काल
- Teen Age
- समस्या समाधान की आयु
- संक्रमण की आयु
- जीवन का सबसे कठिन काल किलपैट्रिक
- देवदूत अवस्था
- वीर पूजा की प्रवृत्ति
- देशभक्ति की भावना
- दबाव, तूफान व संघर्ष की अवस्था
- सर्वाधिक काम प्रवृत्ति
- समायोजन का अभाव

ToppersNotes
Unleash the topper in you

2
CHAPTER

बाल विकास के आयाम

शारीरिक विकास

शारीरिक विकास का अभिप्राय शरीर के समस्त आंतरिक एवं बाह्य अंगों के क्रमिक एवं संतुलित विकास से है। इसमें लम्बाई, भार, शारीरिक अनुपात, हड्डियाँ, माँसपेशियाँ, आंतरिक अंग, शारीरिक स्वास्थ्य एवं क्रियाशीलता का समावेश होता है। यह विकास जन्म से पूर्व प्रारंभ होकर किशोरावस्था के अंत तक विभिन्न चरणों में होता है। शारीरिक विकास के अंतर्गत यह भी विश्लेषित किया जाता हैं कि वे कौन - कौन से तत्व हैं जो शारीरिक विकास को प्रभावित करते हैं ।

शारीरिक विकास के नियम

- **मस्तकाधोमुखी विकास का नियम (Cephalocaudal Law)** : यह नियम बताता है कि शारीरिक विकास की दिशा सिर से नीचे की ओर होती है। अतः पहले मस्तिष्क, फिर धड़, फिर हाथ और अंततः पैरों का विकास होता है।
- **विकास चक्र का नियम (Law of Cyclic Development) :** मानव विकास लयात्मक होता है, यह निरंतर एक समान नहीं होता। यह निम्नलिखित चार चक्रों में विभाजित है:-

चक्र	**आयु सीमा**	**विशेषता**
प्रथम चक्र	जन्म से 2 वर्ष	तीव्रतम विकास
द्वितीय चक्र	2 से 11 वर्ष	विकास धीमा
तृतीय चक्र	11 से 15 वर्ष	पुनः तीव्र विकास
चतुर्थ चक्र	15 से 18 वर्ष	विकास में मंदता

शारीरिक विकास की विशेषताएँ :

- **शारीरिक रचना का विकास :** इसमें शरीर की आकृति, लम्बाई, भार, हड्डियों, दाँतों आदि का विकास सम्मिलित होता है।
- **शारीरिक क्रिया विकास :** तंत्रिका तंत्र, पाचन तंत्र, श्वसन तंत्र, संचार तंत्र, अंतःस्रावी ग्रंथियाँ आदि का समुचित विकास।

विकास की अवस्थाओं में शारीरिक विकास :

- **शैशवावस्था (Infancy)** (जन्म से 6 वर्ष तक) : शैशवावस्था में शारीरिक विकास अत्यन्त तीव्र गति से होता है। इस अवस्था में बालक का शरीर आकार, वजन, लंबाई, हड्डियों, माँसपेशियों और आंतरिक अंगों के स्तर पर तीव्रता से विकसित होता है।
  - ✓ **भार**: जन्म के समय बालकों का औसत वजन लगभग 7.15 पौंड और बालिकाओं का 7.13 पौंड होता है। जन्म के छह माह में शिशु का वजन दुगुना और एक वर्ष के अंत तक तिगुना हो जाता है, जो दर्शाता है कि इस अवस्था में शरीर की वृद्धि अत्यंत तीव्र होती है।
  - ✓ **लंबाई**: जन्म पर शिशु की औसत लंबाई लगभग 50 सेमी. होती है, जो एक वर्ष की आयु में 67–70 सेमी. हो जाती है। दो वर्ष तक यह बढ़कर लगभग 77–82 सेमी. तथा छह वर्ष तक 100–110 सेमी. तक पहुँच जाती है।
  - ✓ **सिर और मस्तिष्क**: जन्म के समय शिशु का सिर उसके शरीर की कुल लंबाई का एक चौथाई होता है। पहले दो वर्षों में सिर का विकास अत्यंत तीव्र गति से होता है और मस्तिष्क का वजन शरीर के कुल वजन की तुलना में अधिक होता है।

- ✓ **हड्डियाँ**: नवजात शिशु में लगभग 300 हड्डियाँ होती हैं जो कोमल और लचीली होती हैं। जैसे-जैसे शिशु का विकास होता है, ये हड्डियाँ कैल्शियम, फॉस्फोरस आदि खनिज लवणों के कारण मजबूत होती जाती हैं।
- ✓ **माँसपेशियाँ**: इस अवस्था में शिशु की माँसपेशियाँ उसके कुल शरीर भार का लगभग 23% होती हैं। पहले दो वर्षों में माँसपेशियों का विकास तीव्र होता है और इस आयु तक भुजाएँ दुगुनी तथा टाँगें डेढ़ गुनी लंबाई तक विकसित हो जाती हैं।
- ✓ **अन्य अंग**: छठे महीने से शिशु के दूध के दाँत निकलने शुरू हो जाते हैं, और एक वर्ष की आयु तक आठ दाँत हो जाते हैं। लगभग चार वर्ष की आयु तक सभी दूध के दाँत निकल आते हैं। इसके अतिरिक्त हृदय, फेफड़े, स्नायु तंत्र और पाचन तंत्र आदि का भी तीव्र विकास होता है।

➢ **बाल्यावस्था (Childhood) — 6 से 12 वर्ष तक :** बाल्यावस्था को शारीरिक विकास की स्थिरता एवं प्रशिक्षण की अवस्था माना जाता है। इस काल में शरीर का विकास धीमी गति से, लेकिन नियमित रूप से होता है।

- ✓ **भार**: इस अवस्था में बालकों का भार नियमित रूप से बढ़ता है। लगभग 9–10 वर्ष की आयु तक बालकों का वजन बालिकाओं की तुलना में अधिक होता है, किन्तु इसके बाद बालिकाओं का भार बालकों से अधिक हो जाता है।
- ✓ **लंबाई**: बाल्यावस्था में लंबाई की वृद्धि प्रतिवर्ष लगभग 2–3 इंच की दर से होती है। यह वृद्धि शैशवावस्था की तुलना में धीमी होती है।
- ✓ **हड्डियाँ**: इस काल की प्रारंभिक 4–5 वर्षों में हड्डियों की संख्या में वृद्धि होती है और 10–12 वर्ष की आयु तक हड्डियाँ कठोर तथा मजबूत हो जाती हैं, जिससे शरीर की स्थिरता बढ़ती है।
- ✓ **दाँत**: बाल्यावस्था की शुरुआत में दूध के दाँत गिरने लगते हैं और उनके स्थान पर स्थायी दाँत निकलते हैं। 12–13 वर्ष की अवस्था तक लगभग सभी स्थायी दाँत आ जाते हैं।
- ✓ **मस्तिष्क**: इस अवस्था में मस्तिष्क लगभग पूर्णतः विकसित हो जाता है। बालक इस आयु में अपने शारीरिक गतिविधियों पर नियंत्रण पाना सीखते हैं।
- ✓ **शारीरिक अंग**: बालक के शरीर के अधिकांश अंग इस अवस्था में कार्यात्मक नियंत्रण प्राप्त कर लेते हैं, जिससे उसकी गति, समन्वय और संतुलन क्षमता में सुधार आता है।

➢ **किशोरावस्था (Adolescence) — 13 से 21 वर्ष तक** : किशोरावस्था शारीरिक परिपक्वता की अवस्था होती है। इस काल में शरीर तीव्रता से बढ़ता है और बालक या बालिका व्यस्कता की ओर बढ़ता है।

- ✓ **लंबाई में वृद्धि**: किशोरावस्था के आरंभ में लड़कियाँ लड़कों से अधिक लंबी हो जाती हैं, किन्तु 14 वर्ष के बाद लड़के अधिक लम्बाई प्राप्त करते हैं। यह वृद्धि पिट्यूटरी ग्रंथि के स्राव से नियंत्रित होती है।
- ✓ **भार में वृद्धि**: इस अवस्था में वजन में तीव्र वृद्धि होती है। 11 से 14 वर्ष की आयु तक बालिकाएँ अधिक भारी होती हैं, जबकि 15 वर्ष के बाद बालक अधिक भारी हो जाते हैं। यह वृद्धि अस्थियों और माँसपेशियों के विकास के कारण होती है।
- ✓ **शारीरिक अनुपात**: किशोरावस्था में सभी शारीरिक अंग समुचित अनुपात में आ जाते हैं और शरीर प्रौढ़ आकृति ग्रहण कर लेता है।

- ✓ **त्वचा और बाल**: इस अवस्था में बालिकाओं की त्वचा में निखार आता है, जबकि बालकों के चेहरे पर दाढ़ी-मूँछ आने से चेहरे की कोमलता कम हो जाती है। आवाज में भी परिवर्तन होता है — लड़कों की आवाज भारी हो जाती है और लड़कियों की आवाज कोमल बनी रहती है।
- ✓ **दाँतों का विकास**: सामान्यतः 13 वर्ष की आयु तक लगभग 28 स्थायी दाँत निकल आते हैं, शेष दाँत किशोरावस्था के दौरान निकलते हैं।
- ✓ **माँसपेशियों का विकास**: 15 वर्ष की आयु तक माँसपेशियों का भार शरीर के कुल भार का लगभग 33% हो जाता है और उसके बाद प्रतिवर्ष लगभग 11% की वृद्धि होती है। यह विकास शरीर को सुडौलता प्रदान करता है।
- ✓ **विभिन्न अंगों का विकास**: इस काल में हृदय, फेफड़े, ज्ञानेन्द्रियाँ, हड्डियाँ और अन्य अंग पूर्णतः विकसित हो जाते हैं। जन्म के समय शरीर में 270 हड्डियाँ होती हैं जो किशोरावस्था में 350 तक बढ़ती हैं और प्रौढ़ावस्था में संयोग के कारण पुनः 206 हो जाती हैं।
- ✓ **यौन सम्बन्धी परिवर्तन**:
  - **मुख्य परिवर्तन (Primary Changes)** – प्रजनन अंगों का परिपक्व होना जैसे– वृषण, डिम्बग्रंथि, गर्भाशय आदि।
  - **गौण परिवर्तन (Secondary Changes)** – जैसे– लड़कों में दाढ़ी-मूँछ, भारी आवाज, शुक्र स्राव तथा लड़कियों में स्तन विकास, मासिक धर्म आदि।

मानसिक विकास

मानसिक विकास का केन्द्र बिन्दु **बुद्धि** होती है। बालक की मानसिक सजगता, चिन्तन, निर्णय क्षमता, कल्पना, स्मरण, तर्क और अभिव्यक्ति इसी पर निर्भर करती है। एक सामान्य बुद्धि वाला बालक मंद बुद्धि बालक की तुलना में वातावरण के साथ अधिक सहजता से समायोजन कर लेता है।

हरलॉक के अनुसार –“Mentally a mature individual is one whose intelligence has reached its maximum growth.” अर्थात् मानसिक रूप से परिपक्व व्यक्ति वह होता है जिसकी बुद्धि अपनी उच्चतम सीमा तक पहुँच चुकी होती है।

जेम्स ड्रेवर (1984) के अनुसार –"व्यक्ति के जन्म से लेकर परिपक्वावस्था तक की मानसिक क्षमताओं एवं मानसिक कार्यों के उत्तरोत्तर प्रकटन और संगठन की प्रक्रिया को मानसिक विकास कहते हैं।"

मानसिक विकास की विशेषताएँ

- ➢ मानसिक विकास आयु के साथ क्रमिक रूप से बढ़ता है।
- ➢ इससे बालक की बुद्धि और रुचियों में विस्तार होता है।
- ➢ नवीन विचारों, कल्पनाओं और चिन्तन की क्षमता का विकास होता है।
- ➢ बालक समय का ज्ञान प्राप्त करता है और उसे सही तरह से समझने लगता है।
- ➢ हावभाव और क्रियाओं के माध्यम से मनोवृत्तियों की अभिव्यक्ति करता है।
- ➢ योजना बनाने की योग्यता का विकास होता है।
- ➢ बौद्धिक विकास एक क्रमबद्ध प्रक्रिया होती है।
- ➢ बालक गत अनुभवों से सीखने लगता है।
- ➢ निर्णय लेने की क्षमता विकसित होती है।

शैशवावस्था में मानसिक विकास (जन्म से 2 वर्ष तक) : शिशु जन्म के समय निरीह अवस्था में होता है। वह केवल रोना, साँस लेना, और सर्दी में कांपना जैसी प्रतिवर्त क्रियाएँ करता है। तीव्र ध्वनियों पर चौंकना और तीव्र रोशनी की ओर ध्यान देना प्रारंभ करता है।

जन्म से दो सप्ताह तक : जन्म के समय शिशु निरीह अवस्था में होता है, वह केवल अपनी शारीरिक दशाओं के अनुसार प्रतिवर्त क्रियायें, जैसे-रोना, सांस लेना, अधिक सर्दी लगने पर कांपना, आदि प्रदर्शित करता है। कभी-कभी तीव्र ध्वनियों को सुनकर चौंक जाता है। जन्म के दूसरे सप्ताह में वह तीव्र रोशनी की ओर भी ध्यान देने लगता है।

तीसरे सप्ताह से द्वितीय वर्ष तक:

- शिशु माँ को पहचानने लगता है और माँ की गोद में जाने पर शांत हो जाता है।
- प्रथम माह में वह सुख-दुख का अनुभव करता है और अकेले छोड़ देने पर रोता है।
- द्वितीय माह में वस्तुओं की ओर ध्यान देता है और माँ को देखकर मुस्कराता है।
- तृतीय माह में वस्तुओं को पकड़ता है और उत्तेजनाओं पर प्रतिक्रिया देता है।
- चतुर्थ माह में क्रोध और स्नेह में अंतर समझता है, वस्तुएँ हटाने पर उन्हें खींचने का प्रयास करता है।
- पाँचवें माह में माँ को पहचानता है, उसके अलग होने पर बेचैनी दर्शाता है।
- छठे माह में अनुकरण की क्षमता आती है, दूध न मिलने पर क्रोधित होता है, मिलने पर मुस्कराता है।
- सातवें माह में पसंद-नापसंद का भाव विकसित होता है, स्वाद, ताप, प्रकाश आदि का ज्ञान प्राप्त होता है।
- आठवें माह में खिलौने को लेकर अधिकार जताता है, संकेतों को समझता है।
- नवें माह में समान आयु के बच्चों के साथ खेलता है।
- दसवें माह में सहयोग और विरोध की प्रवृत्तियाँ विकसित होती हैं।
- ग्यारहवें और बारहवें माह में एकाक्षरी शब्दों का प्रयोग होता है, निरीक्षण की प्रवृत्ति बढ़ती है।

प्रथम और द्वितीय वर्ष:

- बालक भाषा के माध्यम से विचार प्रकट करने लगता है।
- एक से दो शब्दों वाले वाक्य बोलता है।
- समूह में रहना पसंद करता है, सामाजिक क्रियाओं का अनुकरण करता है।
- शब्द भंडार, स्मृति, कल्पना और चिन्तन क्षमता विकसित होती है।

बाल्यावस्था में मानसिक विकास (3–12 वर्ष तक) :

तीसरा वर्ष:

- जिज्ञासा बढ़ती है, बालक प्रश्न पूछता है।
- संकेतों से फल, शरीर के अंग पहचानता है।
- दैनिक वस्तुओं को पहचानता और उपयोग करता है।

चौथा वर्ष:

- अंकों की गिनती जानता है, पैसों की समझ आती है।
- आकारों का अंतर समझता है, लिखना प्रारंभ करता है।

पाँचवाँ वर्ष:

- तुलनात्मक ज्ञान आता है, नाम, पता, परिवार की जानकारी होती है।
- जटिल वाक्य बनाने लगता है, गणितीय ज्ञान विकसित होता है।

छठा वर्ष:

- भाषा और प्रत्ययात्मक ज्ञान में वृद्धि होती है।
- चित्रों की पहचान करता है, ध्यान और अनुकरण क्षमता बढ़ती है।

सातवाँ वर्ष:

- तर्क और विचार की स्पष्टता आती है।
- रंग, स्वाद, गंध आदि का ज्ञान परिपक्व होता है।

आठवाँ वर्ष:

- भाषा प्रवाहपूर्ण होती है, स्मरण क्षमता तीव्र होती है।
- समूह में रहने की प्रवृत्ति और सामाजिक सहभागिता बढ़ती है।

ToppersNotes Unleash the topper in you

नवाँ वर्ष:

- बालक समय, तारीख, मूल्य, दूरी आदि की सटीक जानकारी रखता है।
- पढ़ाई और विद्यालयी गतिविधियों में रुचि बढ़ती है।

दसवाँ वर्ष:

- वाक्यशक्ति, निरीक्षण, तर्क और स्मृति अत्यधिक विकसित होते हैं।
- 20-25 शब्दों के वाक्य बनाता है, कहानियाँ, कविताएँ याद रखता है।

ग्यारहवाँ वर्ष:

- वस्तुओं की समानता–भिन्नता समझता है।
- गणितीय और तार्किक सोच तीव्र हो जाती है।

बारहवाँ वर्ष:

- अनुभव आधारित समाधान देना सीखता है।
- जिज्ञासा, शब्द भंडार, चिन्तन, ध्यान और तर्कशक्ति अत्यधिक विकसित होती है।

किशोरावस्था में मानसिक विकास (13–21 वर्ष तक) : इस अवस्था में मानसिक विकास तीव्रतम होता है। **वुडवर्थ** के अनुसार, "मानसिक विकास 15–20 वर्ष की आयु में अपनी उच्चतम सीमा पर पहुँचता है।"

- **रुचियों का विकास:** किशोरों में बहुमुखी रुचियाँ विकसित होती हैं। बालिकाएँ नृत्य, संगीत, कला में रुचि लेती हैं; बालक खेल, प्रतिस्पर्धा व तकनीकी कार्यों में।
- **सीखने की क्षमता का विकास:**रुचियों के आधार पर किशोर विविध शैक्षणिक और कौशल संबंधी कार्यों को सीखने में रुचि लेने लगते हैं।
- **मानसिक योग्यताओं का विकास:**सोचने, तर्क करने, निर्णय लेने, समस्या समाधान जैसे गुण विकसित होते हैं।
- **बुद्धि का उच्चतम विकास:** इस अवस्था में बुद्धि अपने शिखर पर पहुँचती है, जिससे बालकों में निम्नलिखित गुण का परिपक्व रूप विकसित हो जाता है।
  - ✓ तर्क शक्ति
  - ✓ स्मरण शक्ति
  - ✓ कल्पना शक्ति
  - ✓ चिन्तन
  - ✓ भाषा का विकास
  - ✓ एकाग्रता की क्षमता

संवेगात्मक विकास

संवेगात्मक विकास मानव जीवन के समग्र विकास तथा सन्तुलित व्यक्तित्व निर्माण के लिए अत्यन्त आवश्यक होता है। व्यक्ति का मानसिक, सामाजिक तथा व्यवहारिक स्तर, उसके संवेगात्मक संतुलन पर निर्भर करता है। जब व्यक्ति भय, क्रोध, प्रेम, घृणा, दया, ईर्ष्या आदि जैसे संवेगों को उचित समय, उचित व्यक्ति और उचित माध्यम से प्रकट करना सीख जाता है, तभी उसे संवेगात्मक रूप से परिपक्व माना जाता है।

संवेगात्मक विकास का महत्व इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि यदि किसी व्यक्ति के संवेग संतुलित नहीं हैं, तो उसका व्यक्तित्व विघटन की ओर अग्रसर हो सकता है। संवेग सृजनात्मक और विनाशात्मक दोनों हो सकते हैं। 'प्रेम' जहाँ रचनात्मक ऊर्जा प्रदान करता है, वहीं 'ईर्ष्या', 'घृणा' एवं 'अवसाद' व्यक्ति को विनाश की ओर ले जाते हैं।

वुडवर्थ (Woodworth) के अनुसार, संवेग व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक ऊर्जा के सक्रिय हो जाने की स्थिति है।

मैकडूगल (McDougall) के अनुसार, संवेग वह अनुभव है जो किसी न किसी मूल प्रवृत्ति से सम्बद्ध होता है।

संवेगात्मक विकास की विशेषताएँ :

- संवेगात्मक विकास विभिन्न अवस्थाओं – शैशव, बाल्य, किशोरावस्था – में क्रमिक रूप से होता है।
- जैसे-जैसे बालक की आयु बढ़ती है, उसके संवेग अधिक जटिल एवं परिपक्व होते जाते हैं।
- संवेगों का उचित अनुभव और अभिव्यक्ति संवेगात्मक परिपक्वता लाती है।
- संवेगात्मक विकास संवेगों के प्रशिक्षण पर आधारित होता है – जैसे उन्हें नियंत्रित करना, उचित ढंग से व्यक्त करना, एक संवेग को दूसरे में रूपांतरित करना आदि।
- यह विकास बालक के व्यवहार, उसकी सामाजिक सहभागिता और आत्म-संयम को प्रभावित करता है।

शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास (Infancy: 0–2 वर्ष) : शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास की गति धीमी होती है तथा प्रारंभ में संवेग अस्पष्ट रूप में दिखाई देते हैं। इस अवस्था में संवेग अधिकतर प्रतिवर्त क्रियाओं के रूप में व्यक्त होते हैं।

- इस अवस्था में बालक की संवेगात्मक प्रतिक्रियाएँ तीव्र लेकिन क्षणिक होती हैं। वह कभी रोता है, कभी हँसता है और कभी-कभी दोनों का मिश्रित प्रकटीकरण करता है।
- प्रमुख संवेग – भय, क्रोध और प्रेम – का विकास इस अवस्था में प्रारंभ होता है।
- शिशु जब दूध नहीं मिलता तो क्रोध करता है, जब माँ आती है तो मुस्कराता है – यही प्रारंभिक संवेगात्मक प्रतिक्रिया होती है।
- जैसे-जैसे आयु बढ़ती है, शिशु की संवेगात्मक प्रतिक्रियाओं में तीव्रता और स्पष्टता आने लगती है।
- वातावरण की भूमिका भी शैशवावस्था के अंतिम चरणों में संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने लगती है।

बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास (Childhood: 3–12 वर्ष) : इस अवस्था में संवेग अधिक स्थायी एवं सुसंगठित होते हैं। बालक सामाजिक नियमों और अपेक्षाओं के अनुरूप अपने संवेगों को नियंत्रित करना और व्यक्त करना सीखने लगता है।

- इस काल में बालक प्रेम, ईर्ष्या, घृणा, प्रतिस्पर्धा जैसे संवेगों को पहचानने और प्रकट करने लगता है।
- वह अपने व्यवहार को माता-पिता और शिक्षकों की अपेक्षाओं के अनुरूप ढालने का प्रयास करता है।
- इस अवस्था में बालक कभी-कभी झूठ बोलकर अपने को उपेक्षा से बचाने की कोशिश करता है – यह भी संवेगात्मक विकास का भाग है।
- अंततः वह अपने संवेगों पर नियंत्रण करना सीखता है, जिससे उसका सामाजिक समायोजन बेहतर होता है।
- संवेग अब तात्कालिक प्रतिक्रिया न होकर अनुभवों और परिस्थितियों के अनुरूप परिपक्व होकर प्रकट होते हैं।

किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास (Adolescence: 13–21 वर्ष) : किशोरावस्था को संवेगात्मक अस्थिरता की अवस्था कहा जाता है। इस समय शरीर में हार्मोनल परिवर्तन तीव्र होते हैं, जो मानसिक एवं संवेगात्मक उतार-चढ़ाव को जन्म देते हैं।

- किशोर/किशोरी में प्रेम, दया, क्रोध, सहानुभूति जैसे संवेग अधिक स्थायी और तीव्र रूप में प्रकट होते हैं।
- वे इन संवेगों पर पूर्णतः नियंत्रण नहीं रख पाते, जिससे भावनात्मक अस्थिरता देखी जाती है।
- शारीरिक शक्ति की स्थिति भी संवेगों को प्रभावित करती है – सबल किशोर अधिक स्थिर रहते हैं जबकि कमजोर किशोर अधिक विचलित।
- किशोर अपने रूप, कद-काठी, पढ़ाई, सम्मान, सामाजिक स्थिति, प्रेम संबंधों आदि को लेकर अत्यधिक संवेदनशील रहते हैं।

- उन्हें यह अनुभव होता है कि वे न तो पूर्णतः बालक हैं, न ही पूर्ण वयस्क, जिससे उनकी संवेगात्मक पहचान संकट में आ जाती है।
- इस असमंजस की स्थिति में यदि उन्हें समुचित मार्गदर्शन नहीं मिलता, तो वे घर से भागने, आत्महत्या जैसे चरम विकल्पों की ओर भी जा सकते हैं।

किशोरावस्था में संवेगात्मक व्यवहार को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक:

- काम प्रवृत्ति की तीव्रता
- सामाजिक अपेक्षाएँ
- आत्म-सम्मान की आवश्यकता
- अस्वीकृति या उपेक्षा का भय
- अनुकरण और प्रतिस्पर्धा की तीव्र प्रवृत्ति

भाषा विकास

भाषा वह सशक्त माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने विचारों, भावनाओं, आवश्यकताओं और अनुभवों को दूसरों तक पहुँचाता है। यह मानव को अन्य जीवों से श्रेष्ठ बनाती है, क्योंकि भाषा ही उसकी बुद्धि, संस्कृति और सामाजिकता का आधार है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है, और विचारों के आदान-प्रदान हेतु उसे निरन्तर भाषा की आवश्यकता होती है। भाषा न केवल संप्रेषण का साधन है, बल्कि यह मानसिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भाषा के विकास के कारण ही बालक समाज में अपने स्थान की स्थापना करता है, विचारों को शुद्धता से प्रकट करता है, और सीखने, पढ़ने, लिखने जैसी क्रियाओं में भाग लेता है।

- **शैशवावस्था में भाषा विकास (Infancy: 0–2 वर्ष) :**
  - ✓ **भाषा का प्रारंभिक स्वरूप** शिशु के प्रथम क्रन्दन (रोने) से माना जाता है।
  - ✓ पहले चार माह में शिशु अधिकतर स्वर ध्वनियाँ करता है।
  - ✓ लगभग 10 माह की अवस्था तक वह किसी एक शब्द की पुनरावृत्ति करता है, जैसे – "मा-मा", "पा-पा"।
  - ✓ डेढ़ वर्ष तक उसकी भाषा अस्पष्ट होती है – जिसे सामान्यतः केवल माता-पिता समझ सकते हैं।
  - ✓ एक से डेढ़ वर्ष में वह एक शब्दीय वाक्य बोलने लगता है – जैसे दूध के लिए "बू-बू"।
- **बाल्यावस्था में भाषा विकास (Childhood: 2–12 वर्ष)**
  - ✓ इस अवस्था में स्वरयंत्र और स्नायु-तंत्र की परिपक्वता के साथ भाषा में तीव्र विकास होता है।
  - ✓ बच्चा शब्दों को जोड़कर छोटे वाक्य बनाता है – जैसे "पापा गए", "मैंने दूध पिया"।
  - ✓ बालिकाओं का भाषा विकास बालकों की तुलना में तेज़ और स्पष्ट होता है।
  - ✓ इस समय भाषा विकास पर परिवार, विद्यालय, सहपाठी, और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि का सीधा प्रभाव होता है।
  - ✓ 5–6 वर्ष की अवस्था तक बच्चा 1500 से 2500 शब्दों का भण्डार अर्जित कर लेता है।
- **किशोरावस्था में भाषा विकास (Adolescence: 13–21 वर्ष) :**
  - ✓ किशोरावस्था में भाषा में **बौद्धिकता, भावनात्मक गहराई और सौंदर्य** देखने को मिलता है।
  - ✓ शब्द चयन में परिपक्वता, वाक्य रचना में शुद्धता और विचारों की स्पष्टता आती है।
  - ✓ कल्पना शक्ति के प्रभाव से कविता, कहानी, नाटक आदि लेखन की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है।

- ✓ विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण के कारण भाषा में माधुर्य और भावप्रवणता प्रकट होती है।
- ✓ भाषा सामाजिक समायोजन में सहायक बनती है, जिससे किशोर समाज में अपनी पहचान बनाता है।

भाषा विकास के चरण (Steps of Language Development)

- ➢ **बोलने की तैयारी (0–1.5 वर्ष)**
  - ✓ **क्रन्दन (Crying):**
    - जन्म के साथ प्रारंभ; प्रारंभिक रोना उद्देश्यहीन होता है।
    - 1 माह के भीतर रोना भूख, पीड़ा, असहजता जैसी आवश्यकताओं से जुड़ जाता है।
    - यह भाषा का प्रारंभिक रूप है, परन्तु अधिक क्रन्दन हानिकारक भी हो सकता है।
  - ✓ **बलबलाना (Babbling):**
    - 2 माह की अवस्था से अस्पष्ट स्वर ध्वनियों की पुनरावृत्ति शुरू होती है – जैसे “पा-पा”, “बा-बा”।
    - यह अनुकरण आधारित होता है और स्वरयंत्र को अभ्यास मिलता है।
    - इस क्रिया से ही वास्तविक शब्दों का विकास होता है।
  - ✓ **हावभाव (Gestures):**
    - बालक मूक भाषा द्वारा अपनी इच्छाएँ प्रकट करता है – जैसे उँगली से इशारा करना, हाथ फैलाना।
    - भाषा के पूरक रूप में कार्य करते हैं; जैसे-जैसे भाषा स्पष्ट होती है, हावभाव घटते जाते हैं।
- ➢ **आकलन शक्ति का विकास (Comprehension)**
  - ✓ बच्चे पहले समझना सीखते हैं, बोलना बाद में।
  - ✓ 4 माह का शिशु माँ की आवाज़ पहचानकर मुस्कराता है।
  - ✓ 1 वर्ष में वह सरल निर्देश समझने लगता है – जैसे "दें", "आओ"।
  - ✓ बुद्धि और आकलन शक्ति में घनिष्ठ सम्बन्ध होता है।
- ➢ **शब्द प्रयोग (Vocabulary)**
  - ✓ **1 वर्ष:** ~10 शब्द
  - ✓ **2 वर्ष:** ~272 शब्द
  - ✓ **3 वर्ष:** ~900 शब्द
  - ✓ **4 वर्ष:** ~1500 शब्द
  - ✓ **5–6 वर्ष:** ~2500 शब्द
  - ✓ **प्रारंभिक शब्द:** संज्ञा और क्रिया (जैसे – “मामा”, “आओ”, “लो”)
  - ✓ **विशेषण, सर्वनाम:** 1.5 से 3 वर्ष के बीच सीखना शुरू करता है।
  - ✓ **विशिष्ट शब्दावली** (Etiquette, Colours, Time, Number, Money, Slangs) 4–6 वर्ष में विकसित होती है।
  - ✓ बालिकाओं का शब्द भण्डार प्रायः बालकों से अधिक होता है।
- ➢ **वाक्य निर्माण (Sentence Formation)**
  - ✓ **1.5–2 वर्ष:** एक शब्दीय वाक्य – “पापा”, “दे दो”
  - ✓ **3–4 वर्ष:** तीन से पाँच शब्दों वाले वाक्य – “मुझे भूख लगी है”
  - ✓ **5–6 वर्ष:** जटिल वाक्य और संयुक्त वाक्य – “पापा ऑफिस गए और मम्मी बाजार”
  - ✓ पहले साधारण वाक्य, फिर मिश्रित और संयुक्त वाक्य बनाना आता है।